# INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

**ISSN 2277 – 9809 (online)**
**ISSN 2348 - 9359 (Print)**

*An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal*

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

# महिलाओं की सामाजिक स्थिति

**डॉ.नंदादेवी बोरसे,**
प्रोफेसर हिन्दी विभाग
क्रां. व्ही.एन.नाईक शिक्षण प्रसारक संस्थाका,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
डोंगरे वस्तीगृह परिसर , नाशिक – 2
Email – nandadeviborse@gmail.com

**सारांश :**

सृष्टि के प्रारम्भिक काल में नर के साथ मादा की उपयोगिता सर्व विदित है | आदिग्रंथों के माध्यम से ज्ञात होता है कि मानव सृष्टि के पूर्व ही सृष्टि के सृजनकर्ता को स्वयं एक से दो होना पडा | इसके पश्चात उसने स्वयं को तीन भागों में विभाजित करके उनके लिए भी देवियों की व्यवस्था करनी पड़ी | शास्त्र में वर्णित है कि स्वयं परमात्मा ने भगवान शिव के रूप में अर्द्धनारीश्वर तथा मनु एवं सतरुपा के रुप में स्वयं को 'नर – नारी' इन दो भागों में विभक्त किया है | अत: यह सिद्ध होता है कि सामाजिक संरचना के पूर्व ही मानवी सृष्टि के लिए नारी का होना नितांत आवश्यक है, नारी के बिना सृष्टि अर्थात परिवार की संरचना नहीं हो सकती है | अतएव नारी की उपयोगिता प्रत्येक क्षेत्र में सराहनीय है | इसीलिए कथन है कि – 'नारी से नर होते है, ध्रुव प्रल्हाद समान |'

आदिम जतियों में शुरू में पशु और मनुष्य में प्रभेद सर्वत्र न तो स्पष्ट है और न धारणा में ही इस संबंध में कोई स्पष्टता है | ऋग्वेद में सृष्टि की उत्पत्ती भौतिकवादी तरीके से किसी उपादान से मानी गयी है | एक ऋचा से यह स्पष्ट है कि सर्वप्रथम पानी की उत्पत्ती हुई और पश्चात सृष्टि हुई | ऋग्वेद में आदिति एवं कश्यप का वर्णन हुआ है | आदिति का अर्थ अनेक अर्थों में लिया गया है | जैसे आकाश अर्थात बीच का स्थान आदिति माता है, पिता है, पुत्र है, आदिति सब देवता तथा पाँचों कबीले है | जो कुछ भी पैदा होगा वह आदिति है | आदिम सृष्टि में सचमुच ही

मैथुन या लिंगभेद अपरिज्ञात था | पूर्व पुरुष सत्य नहीं होता है इसे पूर्व स्त्री भी कहा गया है अर्थात यह मरता नहीं है | दो हिस्सों में विभाजित होकर दो विभिन्न व्यक्तियों में परिणत हो जाता है | पुरुष तथा स्त्री की उत्पत्ति के पीछे कोई रहस्य न होकर प्राकृतिक प्रक्रिया का होना है |

**बीजशब्द -:**

नर, मादा, सृष्टि, आदिग्रंथ, मानव, सृजनकर्ता, शास्त्र, अर्धनारीश्वर, अनु – शतरुपा, संरचना, आदिम जाति, पशु , ऋग्वेद, भौतिकवाद, आदिति, कश्यप, मरीचि, मैथुन, लिंगभेद, कबीला, पूर्ण पुरुष, प्राकृतिक, उत्पत्ति, रहस्य तथा प्रक्रिया आदि |

**प्रस्तावना -:**

नारी की उत्पत्ति का इतिहास वैदिक इतिहास, वैदिक ग्रन्थों एवं पौराणिक कथानकों के आधार पर ही ज्ञात होता है | नारी के इतिहास में प्रामाणिकता का अभाव दृष्टिगोचर होता है | देवी भागवत पुराण में देवी जगत की उत्पत्तिकारिणी मानी गयी है | सत्य को उसके वास्तविक स्वरूप में जानने के लिए असत्य की वास्तविकता को ज्ञात करना तथा उसका अनुभव लेना अति आवश्यक है | अत: माया अर्थात अज्ञान के सिद्धान्त को समझने की आवश्यकता तथा महत्ता उत्पन्न होती है | जीवात्माको तभी आत्मज्ञान हो पायेगा जब उसके समस्त अज्ञानी विकार नष्ट हो जायें | असत्य को जानना तथा उससे मुक्त होना मानव की प्रथम आवश्यकता है |

**विश्लेषण -:**

इस तथ्य को झुठला पाना अत्यंत कठिन है कि नर और नारी ये दोनों परिवाररूपी वाहन के दो चक्र (पहिया) है | मिथ्यात्व का शाब्दिक अर्थ है सत्य को असत्य समझना तथा असत्य को सत्य समझना | यदि हम सत्य को सत्य मान लें तथा असत्य को असत्य मान लें तो यह एक प्रकार से हमें ज्ञान कि प्राप्ति हो जाएगी |"1

एक सत्य ही अखण्ड एवं शाश्वत है | एकमेव सत्य सम्पूर्ण तथा अविभाज्य भी है | इसमें समस्त तत्व सन्निहित है | एकमेव सत्य एक ऐसा अस्तित्व है जो सभी कुछ अपने में समेटे हुए है, उसके बाहर कुछ भी विद्यमान नहीं है |

सत्य अर्थात वास्तविक को जानने के लिए हमें ज्ञानचक्षु की आवश्यकता होती है | यही कारण है कि इसी ज्ञानचक्षीय दृष्टि के माध्यम से हम नर तथा नारी में भेद कर पाते है | नर तथा नारी की शारीरिक संरचना में किसीप्रकार का भेद नहीं है | ज्ञानचक्षु के विषय में भगवान श्रीकृष्ण जी ने श्रीमदभगवतगीता में इसप्रकार कहा है -

" न तु मा शक्यसे द्रष्टुमनेनैत स्वचक्षुषा |
दिव्य ददामि टे चक्षु : पशय में योगैश्वरम |" 2

धार्मिक ग्रन्थों में नारी का यशोगान अत्यंत सुंदर ढंग से विश्लेषित किया गया है |सृष्टि के संचालन में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है | नारी के बिना संसार की निर्मिति नहीं हो सकती है | कहने का तात्पर्य यह है कि नारी के बिना परिवार शब्द की उत्पत्ति नहीं हो सकती है |

नारी का पारिवारिक चित्रण –:

मानव समाज के निर्माण में परिवार की भूमिका अहं स्थान रखती है | समाज की निर्मिति में निम्न तत्वों की आवश्यकता है - 1. नर – नारी 2. शिशु (बच्चे) 3. परिवार 4. समुदाय 5. समाज

परिवार के बिना समाज की कल्पना करना अत्यंत कठिन है | महिलाओं के लिए परिवार वह जगह है, जहाँ उन्हें सुरक्षा तथा देखभाल से मुक्ति मिलती है | इसके ठीक विपरीत यदि सामंजस्य की स्थिति परिवार में नहीं है तो ना ही उसे परिवार वह स्थान प्रतीत होता है जहाँ पर नारी को तनाव – ही – तनाव तथा भयंकर कष्ट सहन करने पड़ते है | इसी स्थिति में पारिवारिक सत्ता से पीड़ित महिला बाहरी एजंसियों की ओर से पारिवारिक मसले में किए जा रहे हस्तक्षेप का स्वागत करती है | इस संदर्भ में अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन का कथन इसप्रकार है –

"परिवार में मतैक्य और संघर्ष का सह – अस्तित्व होता है |" 3

परिवार में सम्बन्ध, आवास, दायित्व तथा सांस्कृतिक लोकाचार का समन्वय होता है | जब हम अपने चारों ओर का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करते है तो हमें विभिन्न प्रकार के आवासीय आदर्श दृष्टिगोचर होते हैं | उदाहरणार्थ जहाँ बच्चे तथा समस्त अभिभावक एकसाथ

रहते हैं तथा जहाँ केवल अभिभावक ही रहते है तथा जहाँ बच्चे अपने अंकल या आंटी के साथ रहते है तथा जहाँ केवल पुरुष या स्त्री अकेले ही रहते है, उनमें परस्पर जीवनानुभूतियाँ भिन्न – भिन्न दृष्टिगोचर होती हैं | सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि, मातृसत्ता के बिना वंश परंपरा का निर्वहन नहीं हो सकता है | वंशपरंपरा को आगे गति प्रदान करने में महिला की भूमिका अग्रगण्य है | कहने का तात्पर्य यह है कि महिलाओं की भूमिका परिवार की ईकाई को अत्यंत गहनता के साथ प्रभावित करती है |

मानव जाति के आदिकाल में मनुष्य मूलस्थानों अर्थात जंगलों, पहाड़ों तथा गुफाओं में निवास करता था | मनुष्य तो शिकार की तलाश में यत्र – तत्र कई दिनों के लिए निवास स्थान से बाहर ही रहता था | उससमय परिवार के भरण – पोषण का निर्वहन महिला द्वारा ही किया जाता था | इस संदर्भ में राहुल सांकृत्यायन जी का कथन इसप्रकार है –

"फल संचय उसकी पहली अवस्था थी तथा दूसरी अवस्था में मछलियों तथा जानवरों के किये गये शिकार से भोजन तैयार करना महिला का कार्य था | मछलियों एवं जानवरों का शिकार तथा फल मानव के आदिकालीन आहार थे | इन दोनों अवस्थाओं पर मानव समाज में महिलाओं का ही अधिकार था | यही से मातृसत्तात्मक प्रणाली का प्रारम्भ माना गया है |"4

मातृसत्तात्मक प्रणाली में नियमानुसार सन्तान माता के नाम से ही पहचानी जाती थी | ऐसी स्थिति में सम्पत्ति की वारिस पुरुष की बहन या मौसी के बच्चों को ही प्राप्त होती थी | पुरुष की सन्तान अपनी पैतृक सम्पत्ति से वंचित रह जाति थी | अब पुरुष के समक्ष अपनी संतति को उत्तराधिकारी बनाने का जटिल प्रश्न था, अत: उसने मातृसत्ता समाप्त करके पितृसत्तात्मक प्रणाली को स्थापित करने का निर्णय लिया | अत: सामाजिक व्यवस्था को पितृसत्तात्मक में परिवर्तित करने के लिए पुरुषों के निश्चयन के द्वारा एकल पति अथवा एकनिष्ठ विवाह पद्धति को स्थापित किया गया |" 5

इसप्रकार मातृसत्ता का विनाश महिला के सामाजिक स्तर तथा प्रतिष्ठा के हनन का इतिहास है | इसप्रकार परिवार के बाहर स्थापित पितृसत्ता परिवार के भीतर भी स्थापित हो गयी | कालान्तर में स्त्री पति की दासी तथा सन्तान उत्पन्न करने का साधन मात्र रह गयी |

पुरुषों का पितृसत्ता स्थापित करने का उद्देश्य नारी को मनुष्यता के तल से नीचे गिराना था। इसी क्रम में पुरुषने नारी को कभी 'तलवार' तो कभी शत्रु के विरुद्ध 'नागिन' के स्वरूप में प्रस्तुत करके एकप्रकार से नारी को पालतू जानवर के रुप में परिवर्तित कर दिया। इसप्रकार यह सिध्द होता है कि जो पहले नारी मानवीय शक्ति थी उसे पाशविक तत्पश्चात उसे यांत्रिक शक्ति में ही बदल दिया। मनुस्मृति में हमें नारी अधिकारों पर अनेक प्रतिबन्धों का उल्लेख प्राप्त होता है।

**निष्कर्ष** : स्त्री का नारीत्व,मातृरुप सर्वत्र मुखर है। नारी से अनेक प्रकार के क्षेत्र यथा – साहित्य, संगीत, नृत्य, नाटक, अभिनय, समाजसेवा, राजनीति, अर्थ जगत, भूगर्भ शास्त्र, नृविज्ञान, अन्तरिक्ष,औषधिविज्ञान, शल्य शास्त्र तथा शस्त्र शास्त्र आदि समस्त क्षेत्र अछूते नहीं रहे हैं। वर्तमान समय में स्त्री पृथ्वी पर पैर रखकर (वह भीं अत्यंत सुदृढता के साथ ) अंतरिक्ष की लम्बाई की नाप ले रही है। यही कारण है की किसी ने ठीक ही कहा है कि – जो हाथ पालना झुलाता है , अन्न को पकाकर सुस्वाद भोजन तैयार कर पुरुष की क्षुधा को तृप्त करता है वही हाथ दुनिया पर राज्य करते हैं।

प्राचीन काल में नारी प्रचण्ड विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ किया करती थी ऐसे कृत्यों से इतिहास भरा पड़ा है। जनाबाई ने तो साक्षात विठ्ठल भगवान के प्रति स्वयं को समर्पित ही कर दिया था। अनेकानेक आख्यानों के माध्यम से ज्ञात होता है कि समाज में नारी का स्थान आदिकाल से ही सर्वोपरि एवं सम्माननीय रहा है।

संदर्भ : -

1. सृष्टि और उसका प्रयोजन – शिवेन्द्र सहाय, पृ. 66, संस्करण 2002, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
2. श्रीमदभगवदगीता – 11/8
3. भारतीय समाज में महिलाएँ – नीरा देसाई, पृ.60, संस्करण 2001, नेशनल बूक ट्रस्ट इंडिया
4. महिलाओं का राजनीतिक सहयोग – डॉ.दिलीप राठोड, पृ.62, संस्करण 2025, समता प्रकाशन, कानपुर
5. – वही - , पृ.63

## ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

# MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

## PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

**भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध**

**ISSN 2321 – 9726**

**WWW.BHARTIYASHODH.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

**ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)**

**WWW.IRJMST.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

**ISSN 2319 – 9202**

**WWW.CASIRJ.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

**ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)**

**WWW.IRJMSH.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

**ISSN 2454-3195 (online)**

**WWW.RJSET.COM**

**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

**ISSN 2582-5445**

**WWW.IRJMSI.COM**

**JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH**

**WWW.JLPER.COM**